Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, JULY-AUG, 2019, VOL- 7/52

वर्धा जिले के वडार समुदाय की सामाजिक –आर्थिक स्थिति का अध्ययन

कविता ना. खोब्रागडे

शोध छात्रा (पीएच.डी. शिक्षा शास्त्र), शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,

वर्धा, महाराष्ट्र., ई.मेल : kavitakhobragade18@gmail.com

Abstract

प्रस्तुत शोध प्रत्र में वर्धा जिले के वडार समुदाय की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया हैं। वडार महाराष्ट्र राज्य में विमुक्त जनजाति में से एक निम्न घुमक्कड़ कहे जाने वाली जनजाति हैं। वडार समुदाय में तीन उपजाति जिसमें गाड़ी वडार, माती वडार, पत्थर वडार हैं। व्यवसाय के कारण तीन उपजाति में वर्ग्रीकृत हुए इस समुदाय का इतिहास बहुत पुराना हैं। भारत के लगभग सभी राज्यों में यह समुदाय अलग-अलग नामों से निवासित हैं। इस समुदाय की सभी राज्यों में सामाजिक और आर्थिक स्थिति अत्यंत गंभीर हैं। सामाजिक न्याय और अधिकारिता सरकार ने विमुक्त, घुमंतु और अर्ध-घुमंतु जनजातियों (एनसीडीएनटी) के लिए जनवरी 2015 में एक राष्ट्रीय आयोगका गठन कियाथा जिसके अध्यक्ष इदाते महोदय जिन्होंने २०१८ में अपनी प्रस्तुत रिपोर्ट भी इस समुदाय की समस्या पर प्रकाश डाला हैं। वडार समुदाय का उल्लेख सिन्धु सभ्यता मे , बौद्ध काल में , जैन काल और १२ वीं शताब्दी तक एक क्षत्रिय के रूप में मिलता हैं। वडार समुदाय ने भारतीय गुफाओं में जिस कला कौशल्य का प्रदर्शन किया है वह विश्व स्तर पर भारतीय सांस्कृतिक संचिता का दिग्दर्शन कर रहा हैं। लेकिन ब्रिटिश काल में इस समुदाय को आपराधिक करार देकर समाज और गावं-शहरों के बाहर कर दिया। उस समय से इस समुदाय की आर्थिक और सामाजिक स्थिति बिकट रही हैं। आजादी के उपरांत समुदाय का सर्वागीण विकास अपेक्षित रहा हैं पर वर्तमान तक इस समुदाय के स्थिति में उनके सामाजिक सशक्तिकरण में काफी बदलाव जरुरी हैं इसी बदलाव को मद्देनजर रखते हुए प्रस्तुत शोध व्दारा वडार समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन कर शोधकर्ती ने समुदाय की सध्य स्थिति और उसमें में हुए बदलाव को देखा हैं। प्रस्तुत शोधकेउद्देश्य -1.वर्धा जिले के वडार समुदाय की रूपांतरित प्रकृति और वर्तमान समस्या का अध्ययन करना। 2. वडारसमुदायकी आर्थिक स्थिति का अध्ययन और विश्लेषण करना । ३.वडारसमुदायकीसामाजिकस्थितिऔर वर्तमान में हुए बदलाव काअध्ययनकरना। शोधप्रश्न- 1.वडार समुदाय की रूपांतरित प्रकृति क्या हैं ? 2. वडार समुदाय की वर्तमान समस्याएं क्या-क्या हैं ?3.वडार समुदाय की आर्थिक स्थिति कैसी हैं? 4. वर्तमान में आर्थिक स्थिति में क्या बदलाव आए हैं ? 5. आर्थिक स्थिति के कारण उनके सामाजिक जीवन पर क्या प्रभाव हैं ? 6. वडारसमुदायकीआर्थिकस्थितिमें क्यासुधार आए हैं ?7. वडारसमुदायकीआर्थिकस्थितिउनकेविकासपरक्याप्रभावकररहीहैं ?8.वडार समुदाय की सामाजिक स्थिति कैसी है ?9. वडारसमुदायकेसामाजिकस्थिति में क्या-क्या बदलाव हुए हैं ? 10. क्या वडार समुदाय आज भी रोजगार हेतू स्थानान्तरण करता है 11. वर्तमानमेंवडारसमुदायकामुख्यव्यवसायक्याहैं ? 12. क्यावडारसमुदायकोअन्यविकसितसमाजसहजतासेस्विकारता है याँ इस समुदाय को आज भी गाँवों के बाहर जुग्गी-झोपड़ीयों में निवास करना पड़ताहै ?13.क्यावडार समुदाय के निरन्तर विस्थापन और स्थानांतरण में कुछ बदलाव आए हैं ?योजना एवं क्रियाविधि : शोध प्रविधि:प्रस्तुत शोध कार्य की प्रकृति मूलतः गुणात्मक हैं। शोध की विभिन्न प्रविधि में से वृत्तात्मक शोध विधि का चयन किया गया है। वृत्तात्मक शोध विधि सामाजिक वास्तविकता को जानने के लिए प्रद्त्तों के संकलन, विश्लेषण तथा प्रस्तुतिकरण का एक अंग हैं।वृत्तात्मक शोध विधि वस्तुत: गुणात्मक अनुसन्धान का वह प्रकार है जिसमें किसी एक इकाई का गहन तथा यथासंभव पूर्ण अध्ययन किया जाता हैं। यह विधि वडार समुदाय की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को जानने हेतु उपयुक्त है। अध्ययन क्षेत्र के सिमित होने के कारण इस अध्ययन में सूक्ष्मता तथा गहराई

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

से वडार समुदाय के चयनित इकाई के व्यवहार प्रतिमानों एवं उसे प्रभावित करने वाले कारकों का विस्तृत गुणात्मक अध्ययन करना सम्भव हैं । शोध का परिसीमन:प्रस्तुत शोध की प्रकृति वृत्तात्मक हैं एवं यह शोध अध्ययन महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जिले के वडार बस्ती (वडारवाडा) में निवासित वडार समुदाय के लोगों तक सिमित हैं । जनसंख्या (Population):प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्धा जिले के कुल 6 तहसील में से वर्धा तहसील के कुल 5 इलाकों में से आर्वी नाका परिसर के एक (1) वडार इलाकें के 50 परिवार (समूह)का चयन किया है । जिसमें कुल १०० (झोपड़ियाँ) घर है । जिसकी कुल जनसँख्या 500 हैं ।प्रतिदर्शन :प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्धा जिले के कुल 6 तहसील में से वर्धा तहसील के कुल 5 इलाकों में से आर्वी नाका परिसर के एक (1) वडार इलाकें के वडारवाडा समुदाय (समूह)का चयन प्रतिदर्शन के रूप में किया है । शोध उपकरण एवं तकनीकी : 1. उद्देश्य-1 एवं उद्देश्य 2- की प्राप्ति के लिए शोधार्थी द्वारा साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से आँकड़े एकत्रित किए गए हैं ।शोध उपकरण के रूप में साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया हैं ।

***मुख्य बिंदु** : वर्धा, वडार, समुदाय, सामाजिक, आर्थिक,*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना :

विविधता में एकता भारतीय संस्कृति की एक अनूठी देन रही हैं । प्राचीन काल में जाति संरचना को चार वर्णों में विभाजित किया गया था। इसके अंतर्गत ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र थे, जिसमें चार स्तरों में सभी मनुष्यों को विभाजित किया गया था । भारतीय समाज में वर्ण और जाति आधारित सामाजिक संरचना होने के प्रमाण मिलते हैं । इसके प्रमाण वैदिक साहित्य, महाभारत, रामायण, मनुस्मृति और स्मृतिग्रंथों में स्पष्ट दिखाई देता हैं । विश्व के अधिकतर देशों में सामाजिक संरचना के अंतर्गत ग्रामीण, नगरीए और आदिवासी आदि स्तरों पर मानवीय सामाजिक जीवन के वर्गीकरण की संरचना दिखाई देती हैं। सामाजिक संरचना के अनुसार प्रत्येक स्तर की जीवनयापन पद्धति, भाषा, धर्म, रीति-रिवाज, खानपान, विवाह विधि आदि में भिन्नता हैं। भारत में परस्पर एक-दूसरों पर निर्भर रहना भारतीय समाज की मुख्य प्रकृति हैं। विकास की गति में परस्पर सहायता और तेज गति अत्यांधिक महत्वपूर्ण हैं (एस.एन. त्रिपाठी2014) । भारत में सापेक्ष विभक्त समुदाय देश के प्रत्येक प्रांत में है जो विकास की प्रक्रिया में पीछे रह गए है और जिन्हें अपने भारत देश में विमुक्त जनजाति, घुमंतू, घुमक्कड़ अर्द्ध घुमन्तु आदि नामों से जाना जाता हैं। विमुक्त जनजाति के ऐतिहासिक अध्ययन से पता चलता है कि भारत की सबसे सभ्य और प्राचीन संस्कृति सिंधू सभ्यता में विमुक्त जनजाति विद्यमान थी और उसका उल्लेख भीमिलता है। इसी संस्कृति से जुडी गोर, बंजारा, गोंड और वडार आदि की संस्कृति जिसकी सच्चाई पूरी दुनिया भर में हैं । इस संस्कृति के बारे में बौद्ध एवं जैन धर्मो मे भी उल्लेख मिलता है। १२ वीं शताब्दी से 17 वीं शताब्दी तक इस

समुदाय केबड़े–बड़े महान योद्धाओं के कार्यों का परिचय इतिहास अध्ययन से मिलता हैं। इस समुदाय के एक महान योद्धा द्वितीय धर्मागुरू का मन्त्र उनकी भाषा में यह है की,

" शिकत शिकवत शिकी राज धतावट
शिके त शिकू जेरी राज पुनई धियान पुनई " ।

(अर्थात "जो समाज शिक्षा प्राप्त करके अपने समाज को शिक्षित करता है वही समाज राजवैभव प्राप्त कर सकता हैं।) "

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता हैं की यह समुदाय शिक्षा के महत्व को समझता था । यह समुदाय कुशल, शिक्षित, संगठित, कला निपुण और दूरदृष्टि निहित कुरीतियों से परे विकास की समझ रखता था । परन्तु समय के साथ यह समुदाय अपने विकास से कोसों दूर चलता गया और ब्रिटिश काल में इस समुदाय को आपराधिक करार देकर गावं और शहर के बाहर रखा गया (लष्कर,व्ही.सुभाष,(2013)। विमुक्त जनजाति में से एक जनजाति महाराष्ट्र में वडार नाम से निवासित हैं। भारत में २०११ के जनगणना आँकड़ो के अनुसार डी-नोटिफाइड या विमुक्त जनजाति समुदाय की आबादी १३.5 करोड़ अर्थात भारत की कुल आबादी के लगभग 3 प्रतिशत (सामाजिक न्याय विभाग अहवाल अनुसार) हैं। भौगोलिक दृष्टी से यह समुदाय भारत के लगभग सभी राज्यों में स्थित हैं। आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटका, गुजरात और महाराष्ट्र आदि राज्यों में अधिक संख्या में निवासित हैं। इस समुदाय की भारत में विशेष पहचान नहीं है और जनसँख्या के अनुसार इनके यथार्थ आँकड़े भी कहीं उपलब्ध नहीं है। हाल ही में उत्तरप्रदेश की सरकार ने इस समुदाय के विकास को लेकर एक समिति गठित की और उसमें उन्होंने कहा की सबसे पहले इस समुदाय की पहचान कर इनकी कुल आबादी याँ जनसँख्या के आधार पर आँकड़े एकत्रित कर उनके निवास हेतू मकान बनवाएं जाए। समिति के सचिव ने उन्हें घुमन्तु कहकर उनकी परिभाषा स्पष्ट की और जिला स्तर पर इस समुदाय के आँकड़े एकत्रित करने का दायित्व जिला प्रमुख प्रशासनिक अधिकारीयों पर सौंपा हैं। यह समाज शिक्षा से इसलिए कोंसो दूर है क्योंकि यह समुदाय रोजगार हेतूसतत स्थानांतरण करता रहा हैं। (www.पत्रिका .कॉम लखनऊ न्यूज)

वडार समुदाय का उदगम स्थान ओरिसा प्रांत हैं। सामान्य जनगणना सन 1871 की रिपोर्ट के अनुसार ओड समुदाय के लोग ओरिसा प्रांत के हैं। 260 ईसा पूर्व में कलिंग के राजा और राजा अशोक के बीच युद्ध हुआ था जिसमें ओरिसा के स्थानिक ओड समुदाय के लोग मारे गये थे।उसके तुरन्त बाद यह ओड लोग ओरिसा प्रांत

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

छोड़कर चले गए थे ओड लोगों का मूल निवास स्थल ओरिसा प्रान्त हैं(हूँ-एन-त्संग चीनी यात्री- भारत यात्री वर्णन और प्रा. विनायक लष्कर-वडार संस्कृति) । ओड का ओडिया, वोड्रा और वड्रा शब्दविस्तार से वडार इस तरह इस समुदाय को महाराष्ट्र में आज वडार नाम से जाना जाता हैं। वर्तमान में यह समुदाय भारत के विभिन्न राज्य जैसे आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडू और महाराष्ट्र के अधिकतर शहरी इलाकों में पायें जाते है । महाराष्ट्र में वर्तमान में 14 विमुक्त जनजाति और ३० घुमंतू जनजाति हैजिनकों 3 % आरक्षण हैं । बौद्ध काल, जैन काल और हिन्दू काल आदि सभी काल में वडार समुदाय ने गुफाओं में जिस कला कौशल्य का प्रदर्शन किया है वह लाज़वाब और विश्व स्तर पर भारतीय सांस्कृतिक संचिता का दिग्दर्शन कर रही हैं । इस समुदाय के लोगों ने देश के विकास और राष्ट्र के निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है । इस समुदाय के लोगों ने भारत देश के बच्चों को शिक्षित करने के लिए विद्यालय, कॉलेज, महाविद्यालय तथा उद्योग निर्माण हेतू बड़े-बड़े गोंडाऊँन, फाक्ट्रिज, राष्ट्रिय महामार्ग, अस्पताल एवं देश के लोगों की धार्मिक भावनाओं को मजबुत बनाने के लिए मन्दिर,मज्जिद, चर्च आदि के साथ गुफांओं, कुँए, डैम, राजमहल, हैण्डपंप् और ऐतिहासिक विभिन्न वास्तु जो दिन-रात मेहनत कर अपनी कुशलता से देश की सुन्दरता को बनाएं रखने का अलौकिक कार्य किया हैं (सतीश पवार- वडार समुदाय और संस्कृति) ।

महाराष्ट्र में विमुक्त जनजाति सूची

महाराष्ट्र में विमुक्त जनजाति (vj) की कुल संख्या 14 हैं और इस प्रवर्ग को 3% आरक्षण हैं जिसमें निम्नलिखित जनजाति शामिल हैं ।

क्रमांक	जाति	सम्बधित अन्य जाति
1	बेरड	नाईक वाडी , तलवार, वाल्मीकि
2	बस्तर	संचुलू वडार
3	भामटा	भामटी , गिरणी, कामाटी, पाथरूट, टकारी, उछले घंटी चोर
4	कैकड़ी	घोटले कोरवा , माकड वाले, पामलोर
5	कंजार भाट	छारा, कंजार,
6	कटाबू	-
7	बंजारा	गोर बंजारा, लम्बादा, लभानी, चरण बंजारा, मथुरा, लभाण
8	पारधी	पाल पालखी
9	राज पारधी	गाव पारधी , हरण शिकारी
10	राजपूत भामटा	परदेशी भामटा , परदेशी भामटा
11	रामोशी	-

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

12	वडार	गाड़ी वड्डार ,जाति वड्डार, माती वड्डार, पाथर वट, संगत राश , दगड फोड्, सालन वाघरी
13	छप्पर बन्द	-
14	वाघरी	-

स्रोत ; अनुसूचित जाति /जनजाति आदेश(सुधार कानून 1976 का 108 में से परिशिष्ट -1 में से भाग- १० में)

महाराष्ट्र राज्य द्वारा निर्धारित विभिन्न वर्गों की सम्बधित आरक्षण सूची

प्रवर्ग	संक्षिप्त नाम	आरक्षण	जाति	जनसँख्या	प्रतिशत
अनुसूचित जाति	SC	13 %	59	1,32,75,898	11.81%
अनु सूचित जनजाति	ST	7 %	47	1,05,10,213	9.35 %
अन्य पिछड़ा वर्ग	OBC	19%	350		
विशेष पिछड़ा वर्ग	SBC	2%	7		
विमुक्त जाति-अ	VJ –A	3%	14		
घुमन्तु जाति –ब	NT -B	2.5%	37		
घुमंतू जाति –क	NT –C	3.5%	1		
घुमन्तु जाति ड	NT –D	2 %	1		
सामाजिक और शैक्षिक पिछड़ा प्रवर्ग		16%	1 (Maratha)		
कुल		68 %			

(विमुक्त जाति,घुमंतू जनजाति,अन्य पिछड़ा जाति और विशेष पिछड़ा जाति कल्याण संचालनालय, महाराष्ट्र राज्य ,पूने) सामाजिक न्याय और विशेष सहाय्य विभाग महाराष्ट्र सरकार (क्रमांक:सीबीसी-10\2006\प्र.क्र.-94\मावक-5)

समस्या कथन (Statement of the topic)" वर्धा जिले के वडार समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन "

शोध के उद्देश्य (Objective of the Research)–

1.वर्धा जिले के वडार समुदाय की रूपांतरित प्रकृति और वर्तमान समस्या का अध्ययन करना।

2. वडारसमुदायकी आर्थिक स्थिति का अध्ययन और विश्लेषण करना ।

३.वडारसमुदायकीसामाजिकस्थितिऔर वर्तमान में हुए बदलाव काअध्ययनकरना ।

योजना एवं क्रियाविधि (Plan andProcedure)

शोध प्रविधि (Research Method):

प्रस्तुत शोध कार्य की प्रकृति मूलतः गुणात्मक हैं। शोध की विभिन्न प्रविधि में से वृत्तात्मक शोध विधि का चयन किया गया है। वृत्तात्मक शोध विधि सामाजिक वास्तविकता को जानने के लिए प्रद्त्तों के संकलन, विश्लेषण तथा प्रस्तुतिकरण का एक अंग हैं। वृत्तात्मक शोध विधि वस्तुत: गुणात्मक अनुसन्धान का वह प्रकार है जिसमें किसी एक इकाई का गहन तथा यथासंभव पूर्ण अध्ययन किया जाता हैं। यह विधि वडार समुदाय की सांस्कृतिक – शैक्षिक स्थिति और इस समुदाय के अन्य पक्ष को जानने हेतु उपयुक्त है। अध्ययन क्षेत्र के सिमित होने के कारण इस अध्ययन में सूक्ष्मता तथा गहराई से वडार समुदाय के चयनित इकाई के व्यवहार प्रतिमानों एवं उसे प्रभावित करने वाले कारकों का विस्तृत गुणात्मक अध्ययन करना सम्भव हैं।

शोध का परिसीमन:

प्रस्तुत शोध की प्रकृति वृत्तात्मक हैं एवं यह शोध अध्ययन महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जिले के वडार बस्ती (वडारवाडा) में निवासित वडार समुदाय के लोगों तक सिमित हैं । जनसंख्या (Population):प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्धा जिले के कुल 6 तहसील में से वर्धा तहसील के कुल 5 इलाकों में से आर्वी नाका परिसर के एक (1) वडार इलाकें के 50 परिवार (समूह)का चयन किया है। जिसमें कुल १०० (झोपड़ियाँ) घर है। जिसकी कुल जनसँख्या 500 हैं। प्रतिदर्शन (Sample) :प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्धा जिले के कुल 6 तहसील में से वर्धा तहसील के कुल 5 इलाकों में सेआर्वी नाका परिसर के एक (1) वडार इलाकें के वडारवाडा समुदाय (समूह)का चयन प्रतिदर्शन के रूप में किया है।

शोध उपकरण एवं तकनीकी (Tools andTechniques)

1) उद्देश्य-1 एवं उद्देश्य 2- की प्राप्ति के लिए शोधार्थी द्वारा साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से आँकड़े एकत्रित किए गए हैं।शोध उपकरण के रूप में साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया हैं ।

सारांश और निष्कर्ष :

उद्देश्य 1 : वर्धा जिले के वडार समुदाय की रूपांतरित प्रकृति और वर्तमान समस्या का अध्ययन करना।

स्थानान्तरण की रूपांतरित प्रकृति : वडार समुदाय व्यवसाय हेतु एक गाँव से दुसरे गाँव स्थानान्तरण करता था जिसके प्रकृति में बदलाव आकर वडार समुदाय का व्यवसाय हेतु स्थानान्तरण लगभग कम हो गया हैं जिसके

कारण समुदाय स्थायी हो गया हैं। समुदाय के स्थानान्तरण के कारण उनकी निवास की समस्या कम हो गई हैं। जुग्गी-झोपडी में रहना, निम्न स्तर का जीवन जीना, उन्नत समाज से दूर होने के कारण सामाजिक विकास की समझ नहीं होना, स्कूल में नामांकन नहीं होने कारण शिक्षा से दूर रहना आदि सभी समस्या केवल व्यवसाय हेतु स्थानान्तरण के कारण होती थी।समुदाय के स्थायी होने से यह समुदाय सामाजिक समझ को समझने लगा हैं।

व्यवसाय की रूपांतरित प्रकृति : वडार समुदाय का पारंपरिक व्यवसाय खोद कार्य, नक्षी कार्य, मिट्टी के बर्तन बनाना, पत्थर की मूर्ति एवं जाता –वरवटा बनाना , खदान से पथर निकलना, मन्दिर –गुफाओं में कला कुशलता से नक्षी कार्य करना आदि सभी पारम्पारिक कार्य लगभग समाप्त हो गए। अब स्थानिक इलाकों में नल पाइप लाइन की खोदाई , जमींन की खोदाई , मकान के लिए खोद्कार्य आदि मेहनत के कार्य समुदाय के पुरुष करता हैं पर आमदनी बहुत कम मिलने के कारण अपनी मुलभुत जरूरतों को पूर्ण नहीं कर पाता हैं। समुदाय की महिला भंगार उठाने का कार्य सुबह 2-३ घन्टे करती हैं जिसकी आमदनी ठीक-ठाक होती हैं।सही मायने में देखा जाए तो दोनों की आमदनी मिलाकर घर का खर्चा आराम से चल सकता हैं लेकिन वर्धा जिले के वडार बस्ती में ज्यादा तर घरों में देशी शराब बचने का काम किया जाता हैं जिसमें बेचेने वाले अच्छे पैसे भी कमा लेते हैं पर वडार बस्ती की अधिकतर महिला और पुरुष दोनों शराब पिने लगे हैं जिसके के कारण परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ती हैं। वडार बस्ती की महिला का विषय अधिक चिंताजनक हैं। भविष्य में यह महिला बच्चों के सामाजीकरण और विकास में बाधाएँ साबित होगी।वडार बस्ती में यह रूपांतरित प्रकृति और समस्या पाई गई हैं।

धर्म के प्रभाव की रूपांतरित प्रकृति : वडार समुदाय पर शुरू से हिन्दू धर्म का प्रभाव था। नामकरण विधि ,वास्तुपूजन, विवाह, मृत्यु विधि आदि सभी विधि हिन्दू धर्म के आधार पर किए जाते थे। लेकिन वर्धा जिले के वडार बस्ती में शोध दरम्यान पाया गया की वडार समुदाय के अधिकतर लोगों ने ख्रिचन धर्म का स्विकार किया हैं। उनका कहना हैं की हमारे घर पर येशु के कारण शान्ति आयी हैं। हमारे घर में पहले विभिन्न देवी-देवताओं की जिसमें दुर्गा देवी जी की पूजा की जाती थी पर उस समय हमारे घर में शान्ति नहीं थी। फादर ने हमारे बच्चों को स्कूल में डाला हमारे बच्चें पड़ रहे है। अवलोकन से पता चला हैं ख्रिश्चन मिशनरी व्दारा विद्यालय और आश्रम स्कूल चलाए जाते हैं जिसमें वडार बच्चों को शिक्षित किया जाता हैं। वडार समुदाय स्थानान्तरण के कारण शिक्षा से कोसों दूर रहा हैं पर इस धर्म के लोगों ने उनकी शिक्षा हेतु प्रयास करने के कारण वडार समुदाय इस धर्म से आकर्षित होकर ज्यादा तर वडार इस धर्म को मानने लगे हैं। धर्म चाहे जो हो पर उनके विकास में बदलाव की

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

झलक दिखाई देती हैं। वडार समुदाय में अधिकतर लोगों ने हिन्दू धर्म का त्याग कर ख्रिश्चन धर्म को इसलिए अपनाना की उनके बच्चे पढ़ रहे हैं अर्थात वडार समुदाय शिक्षा के महत्व को समझने लगा हैं इस रूपांतरित बदलाव को देखा गया हैं।

वेशभूषा की रूपांतरित प्रकृति : वडार समुदाय की महिला चोली और चूड़ी नहीं पहनती थी। समाज में इस प्रथा का अधिक प्रभाव था और चोली पहनना पाप हैं इस धारणा के कारण समाज उसका कठोर विरोध करता था।वर्धा वडार बस्ती में लगभग सभी महिला चोली और चूड़ी पहनती हैं और सौन्दर्य साहित्य का उपयोग कर सुन्दर दिखना भी चाहती हैं। वडार महिला भंगार जमा करने का कार्य करती हैं और भंगार उठाने अकेली शहर के हर कोने में जाती हैं शरीर पर चोली नहीं होना उसके लिए असुरक्षित था पर इस समाज ने इस प्रथा का विरोध कर उसमें सकारात्मक बदलाव के रूपांतरित प्रकृति को देखा गया हैं।

वडार समुदाय की वर्तमान समस्याएँ :

1. वडार समुदाय के पास खुद का मकान यां जमींन न होने कारण बस्ती में निजी मालिक की जमींन पर रहने के कारण पक्का मकान बना नहीं पाते जिसके कारण टॉयलेट,शौचालय, पिने का पानी और नाली की सुविधा मिल नहीं पाती हैं जिससे वडार समुदाय विभिन्न समस्याओं का सामना कर रहा हैं और निम्न स्तर का जीवन यापन कर रहा हैं।

2. वडार समुदाय की वर्तमान और अधिक चिंताजनक समस्याओं में वडार महिला का शराब पीना हैं जिससे वडार बच्चों का भविष्य चिंता का विषय हो रहा हैं।

3. वडार समुदाय के बच्चों की शिक्षा की स्थिति।

4. वडार समुदाय का निम्न आर्थिक स्तर।

उद्देश्य 2 :वडारसमुदायकी आर्थिक स्थिति का अध्ययन और विश्लेषण करना।

1. आधुनिकीकरण के कारण पारंपरिक व्यवसाय लगभग बंद पड़ गए है। वडार समुदाय खोदाई के कार्य जैसे घर, मंदिर, महल, राजवाड़े , स्कूल आदि कार्य कला कुशलता के साथ पहले से करते आए हैं जिसके लिए वें स्थानातरण करते थे। पारंपरिक व्यवसाय पर अब स्थानिक इलाकों में मिला कोई भी व्यवसाय जैसे नल पाईप लाइन खोदना, मकान की खोदाई, जमींन खोदाई आदि मेहनत से भरे कार्य यह समुदाय करता हैं पर इटेरियर डेकोरेटर के कारण उन्हें केवल खोद कार्य हेतु कम पैसे में काम दिया जाता कुशल होने के बावजूद भी कम

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आमदनी में उन्हें काम करना पड़ता हैं। प्राप्त आमदनी से आर्थिक जरूरत पूरी नहीं हो पाती। रोजगार प्राप्त करना मुश्किल होता हैं।अवलोकन से पाया गया की हाल ही में वडार बस्ती में ज्यादा तर घरों में देशी शराब बेचने के व्यवसाय अधिक प्रमाण में चलाए जाते हैं। वडार समुदाय की महिला और पुरुष दोनों शराब पीती हैं जिसके कारण उनकी आर्थिक स्थिति और गंभीर होते जा रही हैं। घर में महिला भंगार उठाने का कार्य कर परिवार में आर्थिक साह्य करती हैं। बच्चों की पढाई , बड़ा परिवार और घर का खर्चा चलाना मुश्किल हो जाता हैं। पुरे वडार बस्ती में कोई सरकारी नौकरी पर नहीं पाया गया। वेतन रोज के काम का रोज मिलता है जिस दिन काम नहीं उस दिन वेतन नहीं। सप्ताह में एक यां दो दिन ही कम मिलता हैं। बारिश के दिनों तो हालात और गंभीर होती हैं। वडार बस्ती में गृह व्यवसाय दिखाई नहीं दिए। प्राप्त आमदनी से घर का खर्चा और नियोजन करना मुश्किल हो जाता है। वर्तमान रोजगार से समुदाय सन्तुष्ट नहीं हैं।

2. वडार समुदाय अपनी रोजगार से बहुत कम आमदनी पाता है। घर का खर्चा और बचत करना असम्भव बताते हैं। बैंक में खाता, RD, हैं पर उसमें पैसे नहीं जमा हो पाते। बचत गट से पैसे उठाए जाते हैं। महिला बचत गट चलाती हैं।

3. वडार समुदाय अपनी आय का सबसे अधिक पैसा शराब, जुआ और अपने व्यसन पर खर्च करता हैं। परिवार की मुलभुत जरूरतों को पूर्ण करने में असक्षम हैं। बच्चों की पढ़ाई का महत्व जानता हैं पर पढ़ाई पर अधिक खर्च करना नहीं चाहता।

4. वडार समुदाय के मकान पक्के ईट के नहीं हैं पर जुग्गी झोपडी से अच्छे हैं। लेकिन मकान की जमींन खुद की नहीं है कब्ज़ा कर कोई सरकारी जमींन पर तो कोई निजी मालिक की जमींन पर छोटे-छोटे घर बनाकर किसी तरह अपना निवास कर रहे हैं। एक घर में 8 से १० लोग छोटे –छोटे घर में एकसाथ रहते हैं। यहाँ पिने के पानी की व्यवस्था नहीं हैं। जल प्राधिकरण जगह नाम पर नहीं होने के कारण पिने का पानी नहीं देती बहुत दूर से हैंडपंप से पानी की व्यवस्था यह समुदाय करता हैं। इस समुदाय की सबसे मुख्य समस्या शौचालय और टॉयलेट की हैं। नाली की व्यवस्था न होने कारण बस्ती में बहुत गन्दगी हैं जिसके कारण कॉलरा, मलेलिया, बुखार आदि जैसी बीमारी और शरीर पर की जख्म जल्दी ठीक नहीं होती हैं यह समुदाय बताता हैं।अर्थात इस समुदाय की स्वास्थ संबधी समस्या अत्यंत बिकट हैं। वडार समुदाय के विकास हेतु विभिन्न सरकारी योजनायें हैं और कुछ योजनाओं की जानकारी समुदाय को है पर स्वंय की जमींन और जरूरतों के काग़ज पत्र नहीं होने कारण यह समुदाय सरकारी

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

योजनाओं का लाभ नहीं उठा पाता हैं। सरकारी घरकुल योजना का यह समुदाय खुद की जगह नहीं होने कारण लाभ नहीं उठा पाते और खुद की जमींन खरीदने की आर्थिक स्थिति नहीं आदि सभी कारण इनके विकास में प्रभाव कर रही हैं ।

5. वडार समुदाय के अधिकतर लोगों के पास राशनकार्ड हैं पर बी.पी.एल. कार्ड कम लोगों के पास हैं। राशन कार्ड से प्राप्त अनाज कुछ प्रतिशत साह्य करती हैं पर महीने भर की जरूरत पूरी नहीं होती हैं।

6. वडार बस्ती में लगभग घरों में बिजली कनेक्शन दिखाई देते हैं पर बिजली बिल उनके नाम पर नहीं आता हैं। कुछ लोगों ने अवैध बिजली कनेक्शन लगाए हैं। लगभग घरों में पंखा, मोबाईल, गैस, टी.व्ही, रेडिओ आदि दिखाई देते हैं पर रेफ्रीजरेटर, पानी का पंप, सिलाई मशीन, बिजली की इस्त्री, कूलर आदि दिखाई नहीं देते हैं।

7. वडार बस्ती वर्धा शहर के बीचों-बीच हैं और मार्केट इलाका पास में हैं। वडार बस्ती में हैंडपंप यां सामुदायिक कुआं नहीं हैं। नगरपालिका का पानी नहीं हैं। सब्जी और अनाज की दुकान बस्ती के पास हैं। सरकारी अस्पताल 2 किलीमीटर की दुरी पर हैं और।

सारांश :उपरोक्त आर्थिक स्थिति से पता चलता हैं की वडार समुदाय के आर्थिक स्थिति में वर्तमान तक विशेष सुधार नहीं हुए हैं। आर्थिक स्थिति व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर प्रभाव करती हैं। वडार समुदाय की आर्थिक स्थिति निम्न स्तर पर हैं।

उद्देश्य ३ :वडारसमुदायकीसामाजिकस्थितिऔर वर्तमान में हुए बदलाव काअध्ययनकरना

1. वडार समुदाय में आयु १८ से ४० आयु वर्ग के अधिक लोग हैं । आयु ६० से ८० वर्ष के लोग कम हैं। वडार बस्ती में एक घर में कम से कम ३ बच्चे और ज्यादा से ज्यादा 6 बच्चे अर्थात जन्म दर अधिक हैं। कुटुंब नियोजन का अभाव दिखाई देता हैं। कुटुंब नियोजन हेतु अस्पताल और सरकारी योजनाओं का लाभ बहुत कम लोग लेते हैं।

2. स्थानान्तरण करते-करते वडार समुदाय अब स्थायी निवासित हो गया हैं। वर्तमान में स्थानातंरण केवल घर के पुरुष किसी व्यवसाय हेतु कुछ दिन के लिए करते हैं और पुन: घर वापिस आते हैं। अब स्थायी निवास करने लगे हैं। पर उनके मकान पक्के ईट के नहीं हैं पर जुग्गी झोपडी से अच्छे हैं। लेकिन मकान की जमींन खुद की नहीं है कब्ज़ा कर कोई सरकारी जमींन पर तो कोई निजी मालिक की जमींन पर छोटे-छोटे घर बनाकर किसी तरह अपना निवास कर रहे हैं। एक घर में 8 से १० लोग छोटे –छोटे घर में एकसाथ रहते हैं। यहाँ पिने के पानी की

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

व्यवस्था नहीं हैं। जल प्राधिकरण जगह स्वंय की नहीं होने कारण पिने का पानी नहीं देती बहुत दूर से हैंडपंप से पानी की व्यवस्था यह समुदाय करता हैं। इस समुदाय की सबसे मुख्य समस्या शौचालय और टॉयलेट की हैं। नाली की व्यवस्था न होने कारण बस्ती में बहुत गन्दगी हैं जिसके कारण कॉलरा,मलेलिया, बुखार आदि जैसी बीमारी और शरीर पर की जख्म जल्दी ठीक नहीं होती हैं यह समुदाय बताता हैं। अर्थात इस समुदाय की स्वास्थ संबधी समस्या अत्यंत बिकट हैं। सरकारी घरकुल योजना का यह समुदाय खुद की जगह नहीं होने कारण लाभ नहीं उठा पाते और खुद की जमींन खरीदने की आर्थिक स्थिति नहीं आदि सभी कारण इनके विकास में प्रभाव कर रही हैं ।

3. वडार परिवार अधिकतर सयुक्त परिवार में रहते हैं एकसाथ रहना और छोटा कमरा होने कारण घर पर रोज झगड़े और आर्थिकता के कारण संघर्ष होते हैं पर इस समुदाय के आपसी सबंध बहुत अच्छे दिखाई दिए हैं। परिवार में सबका ध्यान रखना, मदद करना, सुन लेना और कहना मानना आदि बातों को देखा गया ।सण – त्यौहारों में सभी लोग एकत्रित आकर त्योंहार मनाते हैं। वडार समुदाय में महत्वपूर्ण निर्णय घर के पुरुष वर्ग लेते हैं और उसमें स्त्री वर्ग का भी निर्णय और सहयोग होता हैं। स्त्री को सन्मान दिया जाता हैं। लड़को के पक्ष में अधिक सकारात्मक भूमिका लेते हैं। लड़का-लड़की इस तरह का भेदभाव दिखाई नहीं देता पर पुत्र प्राप्त न होने पर गोद लेने की प्रथा हैं। अधिकतर परिवार में पुत्र होने के प्रमाण हैं।

4. वडार परिवार का स्थानांतरण नहीं के बराबर हैं। पारंपरिक व्यवसाय लगभग बंद पड़ गए है। वडार समुदाय खोदाई के कार्य जैसे घर, मंदिर, महल, राजवाड़े , स्कूल आदि कार्य कला कुशलता के साथ पहले से करते आए हैं उसके लिए वें स्थानातरण करते थे पर अब स्थानिक इलाकों में कोई भी व्यवसाय जैसे नल पाईपलाइन खोदना , मकान की खोदाई , जमींन खोदाई आदि मेहनत के कार्य यह समुदाय करता हैं पर इटेरियर डेकोरेटर के कारण उन्हें केवल खोद कार्य हेतु कम पैसे में काम दिया जाता जिसकी आमदनी कम होने से इनकी आर्थिक जरूरत पूरी नहीं हो पाती । अवलोकन से पाया गया कीहाल ही में कुछ वर्ष में वडार बस्ती में ज्यादा तर घरों में देशी शराब बेचने के व्यवसाय अधिक प्रमाण में चलाए जाते है जिसके कारण वडार महिला भी शराब पिने लगी हैं यह समस्या अधिक चिंताजनक है। परन्तु व्यवसाय हेतु स्थानातरण बंद हो गया हैं जिससे वे स्थायी हो गए हैं इसलिए स्थानातरण के बाद विस्थापन की समस्या कम हो गई हैं।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

5. वडार समुदाय के वेशभूषा में परिवर्तन आए है। महिला वेशभूषा में साड़ी, ब्लाउज, परकर दिखाई दिए और पुरुष वेशभूषा में शर्ट,पैन्ट, जिन्स आदि का उपयोग किया जाता हैं । लड़कियों के वेशभूषा में ड्रेस, सलवार सूट दिखाई दिए हैं। चोली और चूड़ी नहीं पहनने की प्रथा लगभग बंद हो गयी और इसके लिए समाज से जो विरोध होता था वह भी अब बंद हो गया हैं। स्त्री सौन्दर्य प्रसाधन के सभी साहित्य का उपयोग सुन्दर दिखने के लिए वडार महिला करती है। इस समुदाय की महिला पुरे शरीर पर गोंदती थी पर वर्तमान की वडार महिला शरीर पर नहीं गोंदती हैं यह प्रथा भी लगभग बंद होते हुए दिखाई देती हैं।

6. वर्तमान में वडार समुदाय में ज्यादातर विवाह आयु के १६ से १८ के बीच हो जाते हैं।बहुत कम विवाह १२-१४ आयु के बीच पाए गए हैं। वडार समुदाय में बालविवाह जैसी घातक प्रथा दिखाई नहीं देती है पर अपनी जाति के उपजाति में विवाह करने की प्रथा दिखाई देती है । उपजाति में अपने सगे मामा के बेटे, बुआ के बेटे से भी शादी की जाती है और प्रेमविवाह विवाह भी पाए गए हैं। विवाह हिन्दू विधि से पंडित व्दारा मंगलाष्ट्के के साथ संपन्न किया जाता था पर अभी-अभी वर्धा वडार बस्ती के अधिकांश लोगों ने ख्रिश्चन धर्म का स्वीकार करने के कारण अधिकतर घरों में विवाह विधि, नामकरण, वास्तुपूजन, मृत्यु विधि और सण–त्यौहार भी ख्रिश्चन धर्म नुसार फादर के व्दारा किए जाते हैं। विवाह विच्छेद के प्रकरण अधिक दिखाई देते हैं पर विवाह विच्छेद का संघर्ष बस्ती के जातपंचायत के माध्यम से सुलझाया जाता हैं बहुत कम प्रतिशत विवाह विच्छेद की शिकायत कोर्ट या न्यायालय तक जाती हैं। अधिकतर मामले जातपंचायत व्दारा शांत किए जाते हैं। जातपंचायत का प्रभाव अभी भी इस समुदाय पर दिखाई दिया हैं। वडार समुदाय में जातपंचायत का प्रभाव कभी कम नहीं हुआ हैं।पुनर्विवाह का प्रचलन हैं। एक से ज्यादा शादी करने का रिवाज भी दिखाई देता हैं। विधवा विवाह दिखाई देते हैं।

7. वडार समुदाय के शिक्षा के स्थिति में कुछ बदलाव पाए गए । स्थानान्तरण के कारण जो समुदाय शिक्षा से वंचित था उस समुदाय के बच्चे आज स्थायी हो जाने से विद्यालय में नामांकित हो गए हैं । वडार बस्ती में लगभग १०० (सौ) से अधिक बच्चे पढ़ने वाले हैं।उसमें प्राथमिक शिक्षा लेने वाले बच्चे अधिक ४० से ५० हैं।वडार बच्चों के लिए विद्यालय के द्वार तो खुल गए पर शिक्षा सम्बन्धी विविध समस्याएँ दिखाई देती हैं। वडार समुदाय की मातृभाषा तेलगु /तमिल हैं। महाराष्ट्र में सभी विद्यालय मराठी, हिंदी माध्यम की हैं। वडार बच्चों की शिक्षा भाषा के कारण प्रभावित हो रही हैं। वडार बच्चों की विद्यालय में उपस्थिति बहुत कम पायी गई हैं।अभिभावक का अज्ञान, आर्थिक स्थिति, बस्ती का वातावरण और शिक्षा के प्रति उदासीनता आदि अनेक कारण

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

वडार बच्चों की शिक्षा प्रभावित कर रही हैं। सशक्तिकरण के लिए शिक्षा का महत्व अधिक हैं इसलिए शिक्षा वडार समुदाय के सशक्तिकरण के लिए अधिक महत्वपूर्ण हैं। वडार समुदाय शिक्षा लेने के पक्ष में कम और बच्चे जल्दी किसी रोजगार को सीखे इस पक्ष के अधिक दिखाई देते हैं।

सारांश :उपरोक्त निष्कर्ष से पता चलता हैं की वडार समुदाय के सामाजिक स्थिति में कुछ बदलाव जरुर आए हैं। लेकिन अभी भी उनकी सामाजिक स्थिति निम्न स्तर पर ही पाई जाती हैं। वडार समुदाय पर उन्नत समाज की जीवनयापन पद्धति, रहन-सहन, खान-पान, वेषभूषा और जीवन शैली का प्रभाव पर दिखाई देता हैं और वडार समुदाय भी सामाजिक परिवर्तन चाहता हैं लेकिन उनकी आर्थिक स्थिति, कम वेतन, अनियमित रोजगार, व्यसन और उधार का निवास स्थान आदि सभी कारण सामाजिक विकास में बाधाएँ हो रही हैं ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची (Bibliography):

गायकवाड, ल.(2016). वडार वेदना: साकेत प्रकाशन ।

अत्रे त्रि.ना.(2009). गुन्हेगार जाती: वरदा प्रकाशन पुणे ।

जोशी म.(सपा),(2002). भारतीय संस्कृति कोष: भारतीय संस्कृति कोष मंडल पुणे ।

एंथोनी, गि.(संपा) (2008). समाजशास्त्र का आलोचनात्मक परिचय: ग्रन्थ शिल्पी प्रकाशन ।

जोशी, म.(संपा). भारतीय संस्कृति कोष, वॉल्यूम-3

चव्हाण,आर.(2004).भटकें विमुक्त की जातपंचायत, वॉल्यूम-2, पुणे: सुगावा प्रकाशन।

शर्मा, एस.(2004). शिक्षण और अधिगम की सृजनात्मक पद्धतियाँ, नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी ।

शर्मा, सु. (2004), भारत में शिक्षा व्यवस्था: वाणी प्रकाशन ।

त्रिपाठी,स.(1993), शिक्षा-सिद्दांत, दिल्ली: वेंकेट्स प्रकाशन ।

पिसेल, स. (2014),वडार समाज के सामजिक–आर्थिक पृष्टभूमि का चिकीत्सक अध्ययन"भारती विद्यापीठ।

कुलकर्णी,व्ही.(2016),वडार समाज के देवालय की चित्र परम्परा और संस्कृति", तिलक विद्यापीठ।

गिडेन्स, एं. (2008), समाज शास्त्र का आलोचनात्मक परिचय: ग्रन्थ शिल्पी प्रकाशन

सिन्हा,वी..(2009).आधनिक भारत का इतिहास,नईदिल्ली: ज्ञानदा प्रकाशन।

शर्मा, एस. (2014). शिक्षणऔरअधिगम कीसृजनात्मकपद्धतिया. नईदिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी।

लष्कर, वि. (2013). वडार समाज एक समाज शास्त्रीय अध्ययन, पुणे: हरिति प्रकाशन ।

शोध प्रबंध:

पिसेल,एस.अनिता,(२०१४),"वडार समाज की सामाजिक-आर्थिक स्थिती का अध्ययन",भारती विद्‌यापीठ.

लष्कर,व्ही.सुभाष,**(2013),"**भारत के महाराष्ट्र राज्य की डी-नोटीफाईड जनजाति वडार : एक नृजातीय अध्ययन, सावित्रीबाई फूले युनिवर्सिटीपुणे.

कुलकर्णी,व्ही. विक्रम.(२०१६),"वडार समाज के देवालय की चित्र परम्परा और संस्कृति ", तिलक विद्‌यापीठ.

***राठोड,एम.**(2000), "**महाराष्ट्र की डी-नोटीफाईड और नोमॉडिक जनजाति**"*

वेबसाइट :

https://www.bookganga.com/eBooks/Books/Details/4773658078110300157
https://www.linkedin.com/pulse/vadar-samaj-history-vadar-samaj
http://www.freepressjournal.in/mumbai/maharashtra-brings-more-castes-in